ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 7, Issue 8, August 2017 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

भाषिक शैली का स्वरूप

➤ डॉ॰ कृष्ण लाल ढींगरा
एसोसिएट प्रोफ़ेसरः हिंदी विभाग
दिल्ली कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एण्ड कॉमर्स
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

भाषा की आंतरिक–सामाजिक विशेषता उसकी विषमरूपता है। यह ठीक है कि भाषा की आंतरिक व्यवस्था व्यवस्थित होती है परन्तु सामाजिक वस्तु होने के कारण प्रयोग के आधार पर उसके अलग–अलग रूप दिखायी देते हैं। "भाषा की ये विषमरूपता तीन मुख्य आयामों पर पाई जाती है– काल, स्थान और सामाजिक स्तर तथा भाषा व्यवहार का प्रसंग तथा उद्देश्य।" घर के लोगों के साथ बातचीत में भाषा का एक रूप होता है तो बाहर मित्रों के साथ दूसरा रूप और बाज़ार इत्यादि में इन दोनों से भिन्न भाषा के तीसरे रूप का प्रयोग मिलता है। साहित्यिक भाषा में भी विधा, विषयवस्तु, साहित्यकार की रूचि और व्यक्तित्व आदि के अनुरूप भाषा के भिन्न–भिन्न प्रयोग मिलते है। भाषा के रूपों की यह विभिन्नता और विशिष्टता ही शैली की संकल्पना का मूलाधार है।

"शैली" शब्द के मूल में "शील" शब्द है। शाकटायन के उणादि सूत्र में इसे "शी" (शीङ्॰शयने) धातु में "लक्" प्रत्यय के योग से निष्पन्न माना गया है। टीकाकारों ने इसका अर्थ–स्वभाव (शील स्वभाव) किया है। पाणिनि के धातुपाठ में "शील" शब्द के दो अर्थ में एक का अर्थ है – "एकाग्र होना" (समाधि) तथा दूसरे का "अभ्यास होना" (अपधारण अभ्यास) इस प्रकार शैली अभ्यास का वाचक है। यास्क के "निरुक्त" में "शील" शब्द का शैली के अर्थ से मिलता–जुलता प्रयोग दिखायी देता है। संस्कृत भाषा में "शील" शब्द अपने बहु–व्यवहृत रूप में "स्वभाव" के अधिक निकट है। और शैली शब्द का निर्माण कदाचित "स्वाभाविक प्रवृत्ति" या "अभिव्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति" संकल्पना को अभिव्यक्ति देने से हुआ होगा।

निष्कर्ष यह है कि यद्यपि शैली शब्द अत्यंत प्राचीन काल से प्रयुक्त होता आया है परंतु आज जिस अर्थ में इसका प्रयोग होता है। वह सर्वथा नवीन है। आज हमारे यहाँ शैली शब्द अंग्रेजी के स्टाइल के हिंदी पर्याय के रूप में प्रचलित है। आरंभ में "रीति" शब्द तो साहित्यिक अभिव्यक्ति की सामान्य शैली का वाचक रहा परंतु धीरे–धीरे उसमें अर्थ संकोच हो गया और वह कुछ गिनी–चुनी विशेषताओं का वाचक रह गया। इसके विपरीत "शैली" शब्द में कभी अर्थ संकोच नहीं हुआ और वह पूरी भाषिक अभिव्यक्ति पद्धति को अपने भीतर समेटे रहा।

डॉ॰ नगेन्द्र के शब्दों में – आज "रीति" शब्द शास्त्ररूढ़ बनकर रह गया है और उस पुराने सिक्के को आज चालू करना कठिन है जब कि "स्टाइल" के संपूर्ण अर्थ का वहन करता हुआ "शैली" शब्द हिंदी शब्द का टकसाली सिक्का है।[(1)]उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से स्पष्ट है कि "शैली" और "रीति" शब्द एक दूसरे के समकक्ष नहीं रखे जा सकते।

वस्तुतः शैली की अभी तक कोई सर्वमान्य परिभाषा स्थापित नहीं हो पाई है। सैद्धांतिक दृष्टि से उनमें प्रायः अतिव्याप्ति या अव्याप्ति दोष पाया जाता है। फिर भी भिन्न–भिन्न विद्वानों ने शैली को अपने–अपने दृष्टिकोण से परिभाषित करने का प्रयास किया हैं

वस्तुतः "शैली" पश्चिम की देन है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र में अभिव्यक्ति पक्ष के लिए "स्टाइल" टैक्नीक आदि शब्दों का प्रयोग होता है। हिंदी साहित्य समीक्षा में शैलीशास्त्रीय अध्ययन भाषा शास्त्रीय दृष्टिकोण से होता है। शैली वैज्ञानिक अध्ययन से पूर्व शैली शब्द को स्पष्ट एवं परिभाषित करना समुचित लगता है। अर्थ की दृष्टि से "आक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी" में स्टाइल के अनेक अर्थ दिए गये है जिनमें से प्रमुख का उल्लेख मात्र किया जा रहा है–

1. लेखन, लेखक की विधि
2. व्यापक अर्थ में अभिव्यक्ति की विधि

मरी ने शैली का संबंध भाषा से जोड़ा है। उनके अनुसार भाषा का शैलीगत विशेषता किसी भाव या विचार की अभिव्यक्ति है। हांकिट ने शैली का संबंध चयन से माना है। उनके अनुसार किसी एक भाषा के दो ऐसे उच्चारणों का अंतर शैलीय होता है जिनके अर्थ लगभग समान हों, किंतु जा अपनी भाषिक संरचना में एक–दूसरे से भिन्न हो।(2)

"पोप" ने "शैली को 'Dress of the thought' माना है, तो "बपन" ने शैली के माध्यम से 'Style is the man himself' कहकर व्यक्तित्व को प्रमुखता दी हैं अधुनातन संदर्भ में "शैली" में शैलीकार का समग्र व्यक्तित्व झांकता है।

शेरन के अनुसारः किसी कलात्मक अभिव्यंजना–पद्धति में प्रयुक्त व्यक्तित्व को ही शैली (स्टाइल) कह सकते हैं।

रिफात्रे के अनुसारः किसी भाषिक–संरचना द्वारा की गयी ज्ञाप्ति में परिवर्धित एक ऐसे अतिरिक्त बल को "शैली कह सकते है। जिसके मूल भाव में तो परिवर्तन नहीं आता। पर कथन में अभिव्यक्ति सामर्थ्य, प्रभावशीलता और सौंदर्य–ये तीनों अथवा इनमें से कोई एक या दो तत्व अवश्य आ जाते हैं। भारतीय विद्वानों में डा॰ सत्यदेव चौधरी के अनुसार – "शैली शब्द से हमारा तात्पर्य है–कवि का रचना प्रकार जो कि उसके द्वारा प्रयुक्त पदों एवं वाक्यों के माध्यम से अथवा कहिए भाषा के माध्यम से प्रकट होता है। शैली विज्ञान से हमारा अभिप्राय है – वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें किसी काव्य की परख उसकी भाषा में विभिन्न अवयवों को लक्ष्य में रखकर की जाती है।(3)

डॉ॰ सुरेश कुमार के अनुसार "शैली का अर्थ है अभिव्यक्ति को प्रसंग और उद्देश्य के अनुसार भाषा विकल्पन अर्थात वैकल्पिक भाषिक इकाईयों और पैटनों का प्रयोग।(4)

डॉ॰ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार–

"शैलीविज्ञान में शैली का संकल्पना को अत्यंत व्यापक स्तर पर परिभाषित किया जाता है। वह एक और भाषा तथा साहित्य को जोड़ने वाली संकल्पना है, जिसमें संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि "शैली" कलात्मक सौंदर्य की अभिव्यंजक भाषिक संरचना है।(5)

इस प्रसंग में उल्लेख्य है कि डा॰ भोलानाथ तिवारी ने शैली विज्ञान की अत्यंत विस्तृत और सर्वग्राही परिभाषा की है जो शैली के स्वरूप को स्पष्ट करने में सफल है। उनके अनुसार "यदि केवल भाषिक अभिव्यक्ति तक अपने को सीमित रखें जैसा कि प्रायः शैली के संदर्भ में किया जाता है, तो कहा जा सकता है– "भाषिक अभिव्यक्ति के विशिष्ट ढंग को शैली कहते हैं।"

विस्तृत रूप में शैली भाषिक अभिव्यक्ति का विशिष्ट ढंग है जो प्रयोक्ता के व्यक्तित्व तथा विषय से सम्बद्ध होता है तथा जो विचलन चयन, सुसंयोजन, समानांतरता एवं अप्रस्तुतविधान आदि सामान्य अभिव्यक्ति के लिए असुलभ उपकरणों पर आधृत होता है।(6)

यदि शैली संदर्भित परिभाषाओं का विश्लेषण करें तो हम पाएंगें कि समस्त परिभाषाओं में एक लक्षण ऐसा है जो कि समान रूप से दृष्टिगत होता है। वह है शैली विशेष भाषिक संरचना है। सार रूप में कहे तो कह सकते हैं कि जब कोई भाषा का व्यवहार करता है तो उसका अपना एक निजी ढंग होता है। वही उसकी शैली है। किसी कृति के संदर्भ में रचना का रूपायन ही शैली का आविर्भाव है। अर्थात् विचारतत्व या संवेदना का रूप मिलते ही शैली की पृष्ठभूमि निर्मित होती है।

किसी साहित्यिक रचना के "कलात्मक संवेग" को अभिव्यक्त करने वाला भाषिक विधान उस रचना की आंतरिक प्रकृति द्वारा नियंत्रित होता है। अतः किसी रचना का उसकी शैली से अभिन्न और आंतरिक संबंध होता है अर्थात् किसी रचना की शैली को उस रचना से अलग कर के विश्लेषित नहीं किया जा सकता। साहित्यिक रचना की शैली रचना के कथ्य और

अभिव्यंजना से ही नहीं वरन् उन संरचनाओं से भी संबद्ध होती है जिनमें रचना के कथ्य को कलात्मक ढंग से व्यवस्थित किया जाता है। रचनाकार अपने कथ्य को विविध संरचनाओं में व्यवस्थित करके उसमें नए सर्जनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता विकसित करता है। इस प्रकार की क्षमता विकसित करने वाले उपादान ही शैली के मूल तत्व होते हैं। शैलीविज्ञान में इन्हीं शैली तत्वों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

शैलीविज्ञान रचना की भाषा के कलात्मक प्रयोगों का विश्लेषण करते हुए उसके साहित्यिक सौंदर्य को उजागर करता है। डॉ॰ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने शैलीविज्ञान को इस प्रकार परिभाषित किया है – "शैलीविज्ञान भी साहित्य को समझने–समझाने की एक दृष्टि है जो "शैली" के साक्ष्य पर एक और साहित्यिक कृति की संरचना (स्ट्रक्चर) और गठन (टेक्सचर) पर प्रकाश डालती है और दूसरी कृति की संरचना का विश्लेषण करते हुए उसमें अंतर्निहित "साहित्यिकता" का उद्घाटन करती है। भाषा के सर्जनात्मक प्रयोग और व्यंजक प्रभाव के रूप में "शैली" को वह कलात्मक सौंदर्य और भाषिक संरचना का सेतु मानती है और इसके अध्ययन – विश्लेषण के सहारे वह पाठक में साहित्य और कृति के बारे में समझदारी उत्पन्न करती है।[(1)]

यहाँ यह ध्यातव्य है कि साहित्य की यह भाषा सामान्य भाषा से अलग विशिष्ट भाषा होती है। वह अपने मूल रूप में एक सजीव तथासक्रिय व्यवस्था है। साहित्यिक भाषा की अपनी संरचना और अपनी विशिष्टताएं होती है और वह अपने सजीव, सक्रिय, निजी वैशिष्ट्य युक्त अस्तित्व के द्वारा कृति की सौंदर्यचेतना को व्यक्त करने का माध्यम बनती है। शैली वैज्ञानिक अध्ययन का मूल विषय यही है कि साहित्यिक भाषा का सामान्य भाषा से अलग अपना निजी वैशिष्ट्य क्या है अर्थात् अपनी निजी विशिष्टताओं के कारण वह सामान्य भाषा से कहां अलग होती है और क्या उसका यह निजी वैशिष्ट्य कृति की सौंदर्य चेतना को सामने ला पाने की दृष्टि से सफल और सार्थक है। लेकिन डा॰ विद्यानिवास मिश्र के अनुसार साहित्यिक भाषा

और सामान्य भाषा में अंतर मात्र सामान्य और विशेष का नहीं है वरन् "अंतर है दोनों के एकेन्द्रिक और बहुकेन्द्रिक होने में[1] सामान्य भाषा एक प्रकार के संकेत से एक ही प्रकार का संकेत देगा। दूसरे प्रकार का संदेश व्यक्त करने के लिए उ से दूसरे संकेत ग्रहण करने होंगे। "किंतु इसके विपरीत काव्य भाषा में संकेतित अभिप्राय और संकेत दोनों केन्द्रभुत बने रहते हैं, क्योंकि हर संदेश की अद्वितीयता उसके ग्राहक अद्वितीय संकेत से संपन्न होती है और हर संकेत की भी अद्वितीयता उससे ग्रहीत संदेश की अद्वितीयता से और इसके अलावा स्वयं संदेश भी एक साथ कई छटाएँ धारण करता है और प्रत्येक स्तर पर एक नया अर्थ–केन्द्र बना जाता है।सारतः कहा जा सकता है कि शैली एक विशिष्ट चयन है और यह चयन विभिन्न विकल्पों में से ही होता है। चयन की संकल्पना ही शैली का मूल आधार है।

संदर्भ ग्रंथः

1. *डॉ॰ नगेन्द्रः भौलीविज्ञान, पृश्ठ–6*
2. *डॉ॰ भोलानाथ तिवारी, भौलीविज्ञान, पृश्ठ–15*
3. *डॉ॰ सत्यदेव चौधरी, भारतीय भौलीविज्ञान, पृश्ठ–20–21*
4. *डॉ॰ सुरे I कुमार, भौलीविज्ञान और प्रेमचंद की भाशा, पृश्ठ–2*
5. *डॉ॰ रवीन्द्र श्रीवास्तव, संरचनात्मक भौलीविज्ञान, पृश्ठ–20*
6. *डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र, रीतिविज्ञान, पृश्ठ–24*